Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja College Ara

Date; 03/07/2025

Class: U.G Semester - V
(MJC-8)

Clinical Psychology,

Topic ***:- Nature and Scope of Clinical Psychology***

नैदानिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान का एक प्रमुख एवं लोकप्रिय प्रयुक्त शाखा है। नैदानिक मनोविज्ञान जैसे पद का प्रतिपादन सबसे पहले लाइटनर विटमर (Lightner Witmer) ने 1896 में किया और बाद में इस पद के नाम से मनोविज्ञान का एक स्वतंत्र शाखा ही बन गया। नैदानिक मनोविज्ञान का संबंध मानसिक रोगों के वर्णन (description), वर्गीकरण (classification), निदान (diagnosis) तथा पूर्वानुमान (prognosis) से होता है। इसमें मानसिक रोगों का निदान कर मनोवैज्ञानिक विधियों से उसका उपचार (treatment) किया जाता है। यही कारण है कि नैदानिक मनोवैज्ञानिक प्रायः एक उपचार-गृह (clinic) या मानसिक अस्पताल (mental hospital) में काम करते हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों की इस भूमिका की अहमियत इस आँकड़ा से आसानी से पता लगाया जा सकता है कि अभी अमेरिका में मनोवैज्ञानिकों की संख्या लगभग 1,10,000 है जिसमें एक-तिहाई (one-third) सिर्फ नैदानिक मनोवैज्ञानिक (clinical psychologist) ही है। इस शाखा की अहमियत इस बात से भी पता चलता है कि अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ (American Psychological Association a APA) द्वारा स्वीकृत 49 डिवीजन में नैदानिक मनोविज्ञान का अर्थात् डिवीजन संख्या 12 डिवीजन सबसे बड़ा है।
अब हम नैदानिक मनोविज्ञान की कुछ उन परिभाषाओं की ओर ध्यान दें जिसे इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा दी गयी है। जैसे-
सिक्कारेल्ली एवं मेयर' (Ciccarelli & Meyer, 2006) के अनुसार, "नैदानिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान का एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें मनोवैज्ञानिक साधारण से गंभीर रूप से मनोवैज्ञानिक विकृतियों से ग्रस्त व्यक्तियों की पहचान एवं उपचार करते हैं।"
APA के नैदानिक मनोविज्ञान के डिवीजन संख्या 12 जिसे 'सोसाइटी ऑफ क्लिनिकल साइकोलोजी' (Division 12. Society of Clinical Psychology) कहा जाता है, द्वारा नैदानिक मनोविज्ञान की अधिकारिक परिभाषा (official definition) इस प्रकार दी गयी है, "नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में शोध, शिक्षण तथा क्लायट जीव संख्या के बड़े प्रसार में पाये जाने वाले बौद्धिक, सांवेगिक, जैविक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं व्यवहारात्मक कुसमायोजन, अक्षमता तथा कष्ट आदि को समझने, पूर्वानुमान लगाने तथा कम करने के नियमों, विधि एवं कार्य विधियों के उपयोग से संगत सेवाएँ सम्मिलित होती है। नैदानिक मनोविज्ञान सामाजिक-आर्थिक स्तर के सभी स्तरों तथा विभिन्न संस्कृतियों में पूरे जीवन अवधि में मानव कार्यों के बौद्धिक, सांवेगिक, जैविक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं व्यवहारपरक पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करता है।"

कोरचिन' **(Korchin, 1986)** के अनुसार, नैदानिक मनोविज्ञान को स्पष्टतः नैदानिक मनोवृत्ति के रूप में परिभाषित किया जाता है, अर्थात् नैदानिक मनोविज्ञान का संबंध मनोवैज्ञानिक व्यथा (psychological stress) से ग्रसित व्यक्तियों को समझने एवं उन्हें मदद करने से होता है। नैदानिक मनोविज्ञान का संबंध मानव व्यक्तित्व की संरचना (structure) एवं कार्य के बारे में ज्ञान उत्पन्न करने तथा उनका उपयोग करने से भी होता है।"

साकुजो तथा काप्लान **(Saccuzzo & Kaplan, 1984)** के अनुसार, नैदानिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान का एक ऐसा प्रयुक्त शाखा है जो व्यक्तियों को समायोजन करने में, समस्याओं का समाधान करने में, अपने अधिकतम अन्तःशक्ति को परिवर्तित करने, उन्नत बनाने तथा उसे प्राप्त करने में मदद करता है।"

इन परिभाषाओं के विश्लेषण में हमें नैदानिक मनोविज्ञान क स्वरूप (nature) के बारे में कुछ तथ्य प्राप्त होते हैं। इनमें से निम्नांकित प्रमुख हैं-

(i) नैदानिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान का एक प्रयुक्त शाखा *(applied branch)* है जिसकी लोकप्रियता अन्य प्रयुक्त शाखाओं जैसे औद्योगिक मनोविज्ञान *(industrial psychology)* तथा शिक्षा मनोविज्ञान आदि से अधिक है।

(ii) नैदानिक मनोविज्ञान में सांवेगिक *(emotional)* एवं व्यवहारात्मक *(behavioural)* समस्याओं का निदान एवं उपचार पर बल डाला जाता है। इन समस्याओं में प्रमुख है-मानसिक रोग, किशोर अपराध, दुर्बलता *(mental retardation),* वैवाहिक एवं पारिवारिक संघर्ष, औषध व्यसन *(drug addiction),* अपराधिक व्यवहार *(criminal behaviour)* आदि। इन समस्याओं के प्रति नैदानिक मनोवैज्ञानिक की एक विशेष मनोवृत्ति *(attitude)* होती है जिसे कोरचीन *(Korchin, 1986)* ने नैदानिक मनोवृत्ति *(clinical attitude)* कहा है। नैदानिक मनोवृत्ति में अन्य बातों के अलावा संवेगात्मक एवं अन्य कम गंभीर मानसिक संघर्षों *(serious mental conflicts)* को समझने के लिए शोधों से तथा अपने प्रयास से प्राप्त ज्ञानों को संगठित करके नैदानिक मनोवैज्ञानिक उनका निदान *(diagnosis)* एवं उपचार करने पर अधिक बल डालते हैं।
(iii) नैदानिक मनोविज्ञान में संवेगात्मक एवं व्यवहारात्मक समस्याओं को समझने के लिए व्यक्ति के व्यक्तित्व गतिकी *(personality dynamics)* के अध्ययन पर भी बल डाला जाता है। सिगमण्ड फ्रायड *(Sigmund Freud)* ने नैदानिक मनोविज्ञान के इस पक्ष पर सबसे अधिक बल डाला है। आधुनिक नैदानिक मनोवैज्ञानिकों जैसे-कोरचीन *(Korchin, 1986)* एवं फेयर्स *(Phares, 1984)* द्वारा भी इस पक्ष पर अधिक बल डाला गया है। शायद यही कारण है कि नैदानिक मनोविज्ञान में मानव व्यक्तित्व की संरचना एवं कार्यवाही *(functioning)* के अध्ययन की अहमियत काफी अधिक है।

(iv) नैदानिक मनोविज्ञान सभी तरह के संस्कृतियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर के तीनों स्तरों अर्थात् उच्च, मध्य तथा निम्न में व्यक्ति के सांवेगिक, जैविक, सामाजिक पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करने के अलावे बौद्धिक एवं मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर भी विचार-विमर्श करता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि नैदानिक मनोविज्ञान का स्वरूप (nature) प्रयुक्त (applied) है। इसमें मानसिक रोगों तथा अन्य सांवेगिक एवं व्यवहारात्मक समस्याओं का निदान (diagnosis) एवं उपचार (treatment) पर बल डाला जाता है। नैदानिक मनोविज्ञान अपने इस कार्य को पूरा करने में व्यक्ति के व्यक्तित्व गतिकी